Notes

Histography concept method and tools-ll

M A History (semester 4th)

Paper Code.21HIS24CI

Index

1. प्रत्यक्ष वाद को परिभाषित करें तथा इस दृष्टिकोण के मूलभूत तत्वों की समीक्षा करें

2. भारतीय इतिहास में मार्क्सवादी स्कूल के योगदान का मूल्यांकन कीजिए

3. स्त्री वाद क्या है नारीवाद की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें

4. पर्यावरण की राजनीति पर पूर्वी एवं पश्चिमी देशों के विचारों का वर्णन कीजिए.

5.प्रश्न विनसेशेंट आर्थर स्मिथ का संक्षिप्त परिचय दीजिए उनके इतिहास दर्शन के विषय में आप क्या जानते है।

6.प्रश्न राष्ट्रवादी और संप्रदायवादी इतिहास लेखन में फर्क बताइए

7.प्रश्न. कैंब्रिज स्कूल की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए

8.प्रश्न यूरोपियन सामंतवाद के वाद विवाद पर टिप्पणी कीजिए

9.प्रश्न प्राचीन भारत में सामंती व्यवस्था की विशेषताओं का मूल्यांकन कीजिए

10.प्रश्न पूंजीवादी शब्द की व्याख्या कीजिए यूरोप में इसके उदय एवं विकास का विवरण दें.

11.प्रश्न भारत में राष्ट्रीय जागरण के उदय के कारण पर प्रकाश डालिए।

12.प्रश्न इतिहास के स्रोतों का आप कैसे मूल्यांकन करते हैं

प्रश्न 1. प्रत्यक्ष वाद को परिभाषित करें तथा इस दृष्टिकोण के मूलभूत तत्वों की समीक्षा करें

Ans. पुनर्जागरण काल में वैज्ञानिकों ने अपने विज्ञान वादी सोच के अनुसार यह धारण किया कि यदि वैज्ञानिक वीडियो से परिकलन परिकल्पनात्मक भाववादी दार्शनिक तत्वों का परीक्षण और निरीक्षण करना संभव नहीं है तो तर्क के आधार पर आत्मा परमात्मा स्वर्ग नरक की यथार्थ था का बोध और मूल्यांकन किया जाए इस प्रकार **20**वीं साड़ी के आरंभ है में भाववादी दर्शन का स्थान तार्किक भववाद में ले लिया सन **1930** ईस्वी में बर्नेट तथा रेल विभाग के संपादन में और कैंटिशनल का प्रकाशन भी आरंभ हुआ तार्किक भववाद के प्रनेताओं ने स्पष्ट रूप से दर्शन के गुण शोध के लिए तार्किक और वैज्ञानिक वीडियो के प्रयोग की उपयोगिता को अपरिहर माना इन विचारों ने यथार्थता की दृष्टि के लिए तार्किक भावार्थ तार्किक अनुभववाद और वैज्ञानिक अनुभववाद के आधार पर तार्किक विश्लेषण तथा तार्किक संरचना विधि का प्रयोग किया इस तथ्य को स्थापित करने के लिए इन लोगों ने अर्थ सिद्धांत के नाम से प्रचलित किया दार्शनिकों ने इस कार्य के लिए तार्किक भाषा विश्लेषण विषय को आवश्यक बताया

अगस्त कापते नमक दार्शनिक नेपोलियन बोनापार्ट के समय में विद्यमान था उन्होंने समाजशास्त्र तथा प्रत्यक्ष वाद का प्रचलन किया उन्होंने सन **1830 1842** ई की अवधि में प्रत्यक्ष वाद की रचना की उनका प्रत्यक्ष वादी दर्शन पूरी तरह विज्ञान के आधार पर था काम पर की सभी अवधारणाएं प्रत्यक्ष वादी सिद्धांत पर आधारित है कामठी का मानना है कि अनुभव परीक्षण निरीक्षण प्रयोग तथा वर्गीकरण की सुव्यवस्थित कार्य प्रणाली द्वारा न केवल प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन कर पाना संभव है अपितु समाज का अध्ययन भी संभव है विज्ञान के पुनर्जागरण काल में जितने भी आविष्कार किए थे उनके सिद्धांत और प्रणाली प्रकृति की गोद में सुरक्षित थे क्योंकि प्रकृति के नियम अपने हैं जिनमें कुछ तो प्रत्यक्ष है तथा कुछ अप्रत्यक्ष है रात दिन सूर्य चंद्र गति पर ग्रहण रितु कम आदि प्रकृति में प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं निश्चित रूप से मनुष्य ने इन नियमों का ज्ञान अपने अनुभव परीक्षण प्रयोग तथा वर्गीकरण की कार्य प्रणाली द्वारा ही प्राप्त किया हैप्रत्यक्ष वाद की धारणा है कि सामाजिक घटनाएं राज्यों की स्थापना प्रसार विकास संगठन तथा पतन आदि भी निश्चित नियमों के ही अधीन है कामटे प्रत्यक्ष वाद की कार्यप्रणाली की सीमा में धार्मिक तथा सात्विक विचारों को लाना या संभव मानते थे अत उन्होंने अपने प्रत्यक्ष वादी सिद्धांत से उनको दूर रखा क्योंकि उनका प्रत्यक्ष वाद इतिहास की सीमाओं तक की सीमित था वह वास्तव में वैज्ञानिक विद्या द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों को प्रमाणित करने में विश्वास करते थे अतः प्रत्यक्ष वाद किसी निरपेक्ष विचार को यथावत स्वीकार नहीं करता सामाजिक या राजनीतिक परिवर्तन क्योंकि किसी निरपेक्ष विचार का परिणाम नहीं है अतः वह सामाजिक व्यवहार तथा राजनीतिक क्रियाकलापों को प्रत्यक्ष वादी अध्ययन का विषय मानता है

कामठी का विश्वास है कि धार्मिक और तार्किक चिंतन अंधकार में पड़ी किसी अज्ञात वस्तु को खोजने जैसा है ऐसा करने पर अभीष्ट या अनाविष्ट प्राप्त हो भी सकता है और नहीं भी ऐसी उपलब्धियां कासत्य या काल्पनिक होना एक संयोग या अनुमान ही है परंतु प्रत्यक्ष वाद एक यथार्थ प्रणाली है इस कारण उसके निष्कर्ष सत्य यथार्थ होंगे अतः प्रत्यक्ष वाद के आधार तत्व है निरीक्षण अवलोकन प्रयोग तथा वर्गीकरण निश्चित रूप से प्रत्यक्ष वाद का उद्भव विज्ञान की आश्चर्यजनक उपलब्धियां के कारण ही हुआ जिन्होंने साधारण से साधारण लोगों को भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोने का आधार प्रदान किया वैज्ञानिक आविष्कारों का आनंद प्राप्त करने वाले सामान्य लोगों की वैचारिकता में चाहे तर्क और विवेक प्रधान पार्वती का प्रवेश पूरी तरह हुआ हो लेकिन उसने शिक्षित समाज और इतिहासकारों के मन में अवश्य ही प्रचलित धार्मिक विश्वासों के प्रति संका प्रकट की

विज्ञान की उपलब्धियां के इतिहासकार का ध्यान वैज्ञानिक प्रक्रिया की ओर आकर्षित किया इसी चिंतन ने इतिहास के प्रत्यक्ष वादी सिद्धांत को अपनाने की सोच दी और उसने इतिहास के अध्ययन में वैज्ञानिक वीधीयो तथा मान्यताओं को क्रियान्वित करने की ओर कदम बढ़ाए **20**वीं साड़ी के पूर्वाद में जर्मनी फ्रांस इटली में विज्ञान वादी इतिहासकारों के बीच गंभीर विचार विमर्श हुआ इंग्लैंड में सर्वप्रथम प्रोफेसर जी न्यूज़ **1930** ई पर कैंब्रिज विश्वविद्यालय के सत्र आरंभ के अवसर पर अपने अभिभाषण में कहा कि इतिहास विज्ञान है ने काम और अधिक उन्होंने जोड़ देकर कहा कि जब तक इतिहास को कलम मात्रा स्वीकार किया जाएगा तब तक इसमें यथार्थता तथा सूक्ष्मता का समावेश गंभीरता पूर्वक नहीं किया जा सकेगा मार विश्व के रोक की प्रशंसा में लिखा है कि इतिहास अध्ययन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का सर्वाधिक योगदान रॉक का है रॉक ऐतिहासिक प्रत्यक्ष वाद के जनक थे उनके चिंतन को विज्ञान की उपलब्धियां तथा विचार को और दार्शनिकों ने काफी प्रभावित किया था स्रोतों पर आधारित इतिहास अध्ययन के अग्रणी तथा प्रबल समर्थक बारतौड़ चार्ज की वैज्ञानिक वीडियो की पृष्ठभूमि तैयार की थी

बर्लिन विश्वविद्यालय के इतिहास शोध की विधाओं की शिक्षा के लिए रॉक ने अनेक संगोष्ठियों का आयोजन किया था और शोध करने वाले छात्रों को नवीन तकनीक से अवगत कराया था ऐतिहासिक शोध परंपरा को नया आयाम प्रदान किया गया उनके सिद्धांतों का प्रसाद जल्द ही फ्रांस और इंग्लैंड तक हो गया

कंपनी का प्रत्यक्ष वादी सिद्धांत विज्ञान वाद का आह्वान करता दिखाई देता है प्रत्यक्ष वध दर्शन है जो स्थल या भौतिक साक्ष को प्रमाणित नहीं की जा सकने वाली मनुष्य की भाव परख या परंपरा फर्क मान्यताओं को भी आधुनिक काल की अनेक असंभव सी समझी जाने वाली उपलब्धियां को देखकर यह धारण करता है कि वैज्ञानिक वीडियो द्वारा उनके रहस्य को समझा तथा प्रकट किया जा सकता है अतः प्रत्यक्ष वादी आंदोलन का एकमात्र उद्देश्य प्रकृति समाज तथा आध्यात्मिकता के उन देशों का पर्दा पास करना था जिनके फलस्वरूप भ्रांति मूलक प्रवृत्तियों का समाज तथा आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उद्धव तथा विकास हुआ इस वैज्ञानिक आंदोलन भी कहा जा सकता है अतः वैज्ञानिकों के सर्वाधिक प्रहार का लक्ष्य दर्शन तथा इतिहास था जो की आत्मा परमात्मा तथा जगत के संबंध में दार्शनिकों द्वारा अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किए गए इसी बात से अगस्त कामटे में समाजशास्त्र

तथा प्रत्यक्ष वाद को जन्म दिया था उनका मानना था कि समस्त ब्रह्मांड परिवर्तन में प्राकृतिक नियमों द्वारा नियंत्रित व्यवस्थित तथा निर्देशित है यदि हमें उन नियमों को समझना है तो धात्विक या धार्मिक आधारों पर नहीं अपितु परीक्षण निरीक्षक तथा वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य प्रणाली द्वारा समझना चाहिए क्योंकि विज्ञान की वीडियो में कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं है कंटे का कथन है कि इस विधि द्वारा में केवल प्राकृतिक घटनाओं का धन संभव है अपितु समाज का अध्ययन भी संभव है

निष्कर्ष. कंटे का प्रत्यक्ष वाद एक वैज्ञानिक वैचारिक प्रणाली है जिसको विज्ञान वादी इतिहासकारों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया उन्होंने जब प्रत्यक्ष वाद का प्रतिपादन किया था तो उनका अभिप्राय था कि इतिहास तथा समाजशास्त्र में प्रत्यक्ष वादी सिद्धांत का प्रयोग आवश्यक रूप से होना चाहिए यह एक वैज्ञानिक विद्या है जिसका अभिप्राय यथार्थ तथ्यों के शोध तथा उनके आधार पर इतिहास लेखन होना चाहिए कंपनी स्वयं को भी धार्मिक तथा तात्विक विचारों से दूर रखा क्योंकि इनका अध्ययन वैज्ञानिक प्रतिपादन किया रॉकी ने इसी ऐतिहासिक प्रत्यक्षवाद को जन्म दिया और उन्होंने इतिहास शोध की विधाओं की शिक्षा का प्रसार किया ऐतिहासिक प्रत्यक्षवाद की यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी

प्रश्न 2. भारतीय इतिहास में मार्क्सवादी स्कूल के योगदान का मूल्यांकन कीजिए

Ans. मार्क्सवादी लेखन परंपरा का जन्मदाता कल मास था उसने इतिहास लेखन की जिस परंपरा को प्रतिपादित किया था उसे वर्ग संघर्ष के नाम से जाना गया उसने अपने इतिहास लेखन का एक क्रम निर्धारण किया है जिसके अनुसार इतिहास दास प्रथा से सामंतवाद सामंतवाद से पूंजीवाद तथा पूंजीवाद से साम्यवाद की ओर चलता है स्वयं मार्च में इतिहास का अर्थ बदलते हुए लिखा है कि इतिहास उत्पादन के साधनों एवं तरीकों में परिवर्तन का एक विश्लेषणात्मक दस्तावेज है सन **1843** में कार्ल मार्क्स ने जेनी **1** वेस्ट फलन के साथ विवाह किया तथा फ्रांस चला गया पेरिस पहुंचने पर उनकी मुलाकात एजेंट से हुई और दोनों ने मिलकर ही समाजवादी दर्शन का प्रतिपादन किया **1845** ईस्वी में मार्च को फ्रांस छोड़ना पड़ा तथा वह ब्रशस चला गया वहां उसने कम्युनिस्ट लीग की स्थापना की **1848** ईस्वी में उसने अपने प्रसिद्ध कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो का प्रकाशन किया कार्ल मार्क्स यूरोपियन इतिहास के ऐसे अध्याय की उपस्थ जब इंग्लैंड में अनेकों कपड़ा मिले लग चुकी थी रेल इंजन का आविष्कार हो चुका था तथा रेलगाड़िया के लिए पटरिया बचाने का काम चल रहा था इस समय मुद्रण कला भी अपने उत्थान पर थी तथा साम्राज्यवादी विचारधारा ने यूरोपीय राजनीति समाज पर अपना प्रभाव स्थापित कर दिया था मार्च की अपनी जन्मभूमि पर बिस्मार्क जैसे कूटनीतिज्ञ उदित हो रहा था इंग्लैंड में रहते हुए कार्ल मार्क्स ने अपनी महान पुस्तक दास कैपिटल की रचना की थी इस पुस्तक का प्रकाशन **1867** में हुआ पॉलिटिकल इकोनॉमी सन **1859** मेंइन आगरा एडमिशन **1864** में तथा वैल्यू प्राइस एंड प्रॉफिट सन **1867** नामक पुस्तकों की रचना की थी **1883** में इस महान साम्यवादी इतिहासकार की मृत्यु हो गई दास कैपिटल का दूसरा भाग उसके मित्र एंजिस से पूरा किया

1. **मार्क्सवादी इतिहास दर्शन**. कार्ल मार्क्स के इतिहास दर्शन पर ईगल के धन्यवाद का प्रभाव साफ हो तौर पर देखा जा सकता है ईगल का धन्यवाद तथा मार्च द्वारा प्रतिपादित दंडवत समान होते हुए भी उनमें जमीन आसमान का

अंतर था ईगल का धन्यवाद पूरी तरह से आदर्शवाद पर आधारित था जबकि कार्ल मार्क्स का धन्यवाद पूरी तरह से भौतिकवादी सिद्धांत पर आधारित था विश्व में परिवर्तन तथा विकास की क्या क्रमिक क्रिया होती है यह बात उसने ईगल के धन्यवाद से ही प्राप्त की थी और दुकान मार्क्स उसे मानव जीवन के भौतिक पक्ष में संचालित मानता था जबकि हीगल उसे नैतिक पक्ष से प्रभाव प्रमाणित मानता था मानस के समय में अर्थव्यवस्था पर पूंजी पत्तियों का एक छत्र साम्राज्य था इसी समय राष्ट्रवाद और लोकतंत्र का विकास हो रहा था परंतु तत्कालीन सभी सरकारों ने आर्थिक क्षेत्र को नियंत्रित करने या पूंजीवादी बुराइयों को दूर करने का कोई प्रयास नहीं किया परिणाम स्वरुप मजदूरों की दशा दिन प्रतिदिन सोचनीय होती गई मजदूरों की इस दशा के प्रति विद्वानों में सहानुभूति जागृत हुई जिससे समाजवादी विचारधारा का जन्म हुआ परंतु इस सोच वाले समाजवादियों के विचारधारा काल्पनिक थी वास्तव में मसले ही सबसे पहले वैज्ञानिक समाजवाद का प्रतिपादन किया था

प्रोफेसर लॉस कीमार्क्सवादी दर्शन के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि इसने अब तक अन्य के विरुद्ध है स्पष्ट है संतोष को एक निश्चित दर्शन प्रदान किया बिखरे हुए निधन वर्गों को संगठित और प्रभावशाली दल के रूप में लाने की एक लंबी प्रक्रिया का भी श्री गणेश किया किसने सर्वहारा वर्ग को पहली बार उसके द्वारा किए जाने वाले ऐतिहासिक कार्य की महत्वपूर्ण और उसकी गरिमा का ज्ञान करते हुए उसमें विलक्षण जागृति उत्पन्न की लॉस की ने कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो की तुलना अमेरिका के स्वतंत्रता घोषणा पत्र से की है मेनिफेस्टो के मजदूरों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठित होने की प्रेरणा देते हुए उसे इन शब्दों के साथ समाज किया है कम्युनिस्ट क्रांति के दर से शासक वर्ग को काटने दो मजदूर के पास होने के लिए अपनी वीडियो के सिवा कुछ भी नहीं है लेकिन जीतने के लिए उसके पास सारी दुनिया है मानस में अपने सिद्धांत को दंडवादी सिद्धांत के माध्यम से मजबूती प्रदान करने पर जोर दिया और इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या द्वारा उसे प्रमाणित करने का प्रयास किया

मार्च में तुलवादी भौतिकवाद द्वारा ने केवल समाजवाद की अनिवार्यता को सिद्ध किया अभी तो यह भी बताया कि समाजवाद को किस प्रकार लाया जा सकता है वर्ग संघर्ष में कौन लोग समाजवादी शक्तियों का नेतृत्व करेंगे तथा कौन लोग समाजवाद विरोधी शक्तियों का विरोध करेंगे इस तरह का व्यवस्थित समाजवादी चित्र उपस्थित करने के कारण ही मांस में समाजवाद को वैज्ञानिक समाजवाद का दर्जा प्रदान किया जाता है समय की आवश्यकता के चलते ही संभव है मांस की इस विचारधारा से बौद्धिक वर्ग ने अपनी से ऐसेमाती नहीं जताई या फिर आदि संख्या में मजदूरों के संगठित रूप को देखकर मन से ऐसे मत होने की बात जो शोर से प्रस्तुत नहीं की थी उन्होंने इस विचारधारा को सत्य ही माना क्योंकि इसमें ऐसा स्वाभाविक तत्व मौजूद था कि उन्हें मार्कशीट बस अभी धनिया प्रति हुई बताइए उन्हें वैज्ञानिक सिद्धांत लगा मार्च में वर्ग संघर्ष के आधार पर संपूर्ण समाज को 6 अवस्था में विभाजित किया आदिम साम्यवादी व्यवस्था,दास अवस्था, सामंतवादी व्यवस्था ,पूंजीवादी व्यवस्था, समाजवादी व्यवस्था, तथा साम्यवादी व्यवस्था के लिए भौतिकवाद को आधार बनाया और वर्ग संघर्ष का सिद्धांत प्रतिपादित किया उसने इतिहास की भौतिक व्याख्या करके यह प्रमाणित किया कि आरंभिक काल से ही समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है

II. प्रमुख मार्क्सवादी इतिहासकार.

विपिनचंद्र. बिपिन चंद्र भारतीय समाजवादी विचारधारा के उच्च कोटि के इतिहासकार थे इन्होंने भारतीय लेखन में मार्क्सवादी विचारधारा को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान आर्थिक नीतियों के विश्लेषण पर उन्होंने धाराएंस ग्रोथ ऑफ़ इकोनॉमिक्स नेशनलिज्म नामक पुस्तक की रचना की इस रचना के माध्यम से उन्होंने कुटीर उद्योगों के पतन व्यापार वाणिज्य धन निकासी बैंकिंग तथा वित्तीय स्थिति का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया उनकी एक अन्य रचना थी नेशनलिज्म एंड कॉलोनियलिज्म इन इंडिया जिसमें उन्होंने **1857** ई के बाद उदित भारतीय पूंजीवाद का विश्लेषण किया है इंडिया'एस स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस भारतीय राष्ट्रवाद पर आधारित उनकी एक महान रचना है यह पुस्तक वैज्ञानिक शैली पर आधारित है इसमें गांधीवादी विचारधारा का विश्लेषण भी किया गया है उनकी एक अन्य रचना कम्युनलिज्म इन मॉडर्न इंडिया थी जिसमें सांप्रदायिकता के विकास का उल्लेख किया गया है

आर एस शर्मा. इन्होंने भारत में मास्वादी दृष्टि कौन-कौन नए आयाम प्रदान किया यह स्वतंत्र भारत के अंग्रेजी मार्क्सवादी इतिहासकार थे **1958** ईस्वी में उनकी महान कृति स्टडीज इन असिएंट इंडिया का प्रकाशन हुआ जिसमें भारत के निम्न वर्गीय समाज का विश्लेषणात्मक वर्णन किया है इसमें बताया गया है कि किस प्रकार निम्न वर्ग के उनके सभी अधिकार छीन गए

डी डी कौशांबी. यह मार्क्सवादी दृष्टिकोण के एक अन्य इतिहासकार थे उन्होंने भारतीय इतिहास लेखन में मांसवाड़ी चिंतन को समायोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी उन्होंने अपने लेखन में जाति प्रथा को मुख्य विषय बनाया है ब्रह्मणीय विचारधारा का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव था इसका विश्लेषण भी उन्होंने अपनी रचनाओं में किया है इन्होंने सिंधु सभ्यता वैदिक सभ्यता महाजनपदों के उदय तथा बौद्ध जैन धर्म जैसे विषयों पर अपना तथ्य का आकलन प्रस्तुत किया

रोमिला थापर. **1930** ईस्वी में जन्मी राम मिला था पढ़ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से अपना अध्यापक कार्य शुरू किया था वह इतिहास विभाग में रीडर पद पर कार्यक्रम इसके बाद इन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में इतिहास प्राध्यापक के पद पर लंबे समय तक शिक्षण कार्य किया था वह एक उच्च कोटि की शोधकर्ता रही है आधुनिक भारतीय इतिहासकारों में उनका काफी सम्मान प्राप्त है उनकी कृति अशोक और दी देवलीना ऑफ द मौर्य का प्रकाशन **1963** में हुआ था अपनी इस रचना में उन्होंने अशोक की धार्मिक नीति पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है मौर्य साम्राज्य के पतन पर भी उन्होंने अपना विश्लेषणात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किया है इनकी असिएंट इंडियन सोशल हिस्ट्री नामक पुस्तक **1978** ईस्वी में प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने गंगा घाटी में विकसित आरंभिक राज्यों का वर्णन किया है कौशल तथा मगर जैसे राज्यों का इसमें विश्लेषण रूप से वर्णन किया गया है

इरफान हबीब. इनका इतिहास लेखन का कार्य विरासत में मिला था उनके पिता मोहम्मद हबीब भी एक उच्च कोटि के इतिहासकार थे इरफान हबीब भारतीय इतिहास लेखन में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वालों में

विशेष रूप से उल्लेखनीय है उन्होंने अपने लेखन में इतिहास की पुनर्विवाह करने पर अधिक जोर दियाउनकी कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक रचनाएं थी इन्होंने अपनी रचनाओं में जाति व्यवस्था की पुनर व्याख्या की तथा श्रम विभाजन आदि विषयों पर विश्लेषणात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किया है मुगल जमीदार व्यवस्था पर भी उन्होंने लेखन कार्य किया है आर्थिक इतिहास पर भी उन्होंने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है

प्रश्न 3. स्त्री वाद क्या है नारीवाद की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।

Ans. नारी बाद. इस शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी भाषा के साथ फीमेल से हुई है इसका अर्थ है स्त्री अथवा स्त्री संबंधी अतः स्त्री वाद का एक ऐसा आंदोलन है जिसका संबंध स्त्रियों के हितों की रक्षा करने से है

स्त्रीवाद की परिभाषाएं. भिन्न-भिन्न रिजवानों द्वारा स्त्रीवाद की निम्नलिखित परिभाषाएं दी गई है

1 **ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार,** स्त्री वाद स्त्रियों के अधिकारों की मान्यता उनकी उपलब्धियां और अधिकारों की वकालत है.

2. **प्रसिद्ध समाज शास्त्री मेरी आवाज में लिखा** है स्त्री वाद स्त्रियों की वर्तमान तथा भूतकाल की स्थिति का आलोचनात्मक मूल्यांकन है यह स्त्रियों से संबंधित उन मूल्यों के लिए चुनौती है जो स्त्रियों को दूसरों द्वारा पेश किए जाते हैं

3. **चार्लोट बच.** स्त्री वास से अभिप्राय उन विभिन्न सिद्धांतों और आंदोलन से है जो पुरुष की तरफदारी का विरोध तथा पुरुष के प्रति स्त्री की अधीनता की आलोचना करते हैं तथा जो लिंग पर आधारित अन्य को समाप्त करने के लिए वचनबद्ध है

4. **जॉन चारवेट के अनुसार.** स्त्री बात का मूल सिद्धांत यह है की मौलिक योग्यता के पक्ष से पुरुषों तथा स्त्रियों में कोई अंतर नहीं है इस पक्ष में कोई भी पुरुष प्राणी अथवा स्त्री प्राणी नहीं है बल्कि वह मानवीय प्राणी है मनुष्य का स्वभाव तथा महत्व लिंग के पक्ष से स्वतंत्र है

5. **महाकोष एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार.** इसके बाद एक ऐसी धारणा है जिसका जन्म थोड़े समय से हुआ है यह धारणा उन उद्देश्यों तथा विचारों का प्रतिनिधित्व करती है जो स्त्रियों के अधिकारों के पक्ष में चलाए गए आंदोलन के साथ संबंधित है इसमें आंदोलन के निजी सामाजिक राजनीतिक तथा आर्थिक पक्ष शामिल है तथा इसका उद्देश्य स्त्रियों को पुरुषों के समान पूर्ण समानता के स्तर पर लाना है

नारीवाद की मुख्य विशेषताएं .

1. स्त्रियां लैंगिक प्राणी नहीं है बल्कि मानव प्राणी है . नारीवाद एक बुनियादी विचार है कि स्त्रियां लैंगिक प्राणी नहीं है इस विचारधारा के समर्थकों का कहना है कि स्त्रियों को केवल माता पत्नी तथा बहन के रूप में ही नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि उनको एक इंसान के रूप में देखा जाना चाहिए उनका कहना है कि स्त्रियों भी पुरुषों के समान योग्यता तथा बुद्धि रखती हैं और वह सभी कार्यों को करने के योग्य है जो कार्य पुरुषों द्वारा किए जाते हैं उनका कहना है कि

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रियों की पुरुषों से अधीन स्थिति का कार्य है कि उन्हें पुरुषों के समान अपने विकास के अवसर नहीं दिए गए

2. समान अधिकार तथा समान अवसर. नारीवाद के समर्थकों का कहना है कि जीवन की प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार तथा अवसर प्रदान किया जाए उनके अनुसार स्त्रियों को पुरुषों के समान सामाजिक आर्थिक राजनीतिक तथा सांस्कृतिक अधिकार मिलने चाहिए उन्हें भी पुरुषों के समान अपना जीवन स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त करने अपनी रुचि के अनुसार किसी भी व्यवसाय को अपने संपत्ति रखने तथा विवाह करने और तलाक लेने के अधिकार मिलने चाहिए राजनीतिक क्षेत्र में भी उन्हें पुरुषों के समान स्वतंत्रता पूर्वक अपने अद्भुत अधिकार का प्रयोग करने चुनाव लड़ने तथा उच्च सरकारी पद ग्रहण करने के अधिकार होने चाहिए नौकरियों के मामले में लैंगिक आधार पर उनके साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए

3. पितृ प्रधानता का विरोध. नारीवाद पत्र प्रधान को ही स्त्रियों के शोषण दमन तथा उसके साथ किए जाने वाले दुर्व्यवहार का मुख्य कारण मानता है पितृ प्रधान समाज में पुरुष स्त्री पर अपनी प्रधानता स्थापित करता है तथा उसे निर्देश देता है ऐसे समझ में पुरुषों की स्थिति उच्च तथा स्त्रियों की स्थिति निम्न रहती है नारीवाद की ऐसी सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं

4. परिवार की संस्था काविरोध. नारीवाद के कुछ उग्र समर्थ परिवार की संस्था को स्त्रियों की अधीनता का शोषण का एक महत्वपूर्ण कारण मानते हैं परिवार में स्त्री की भूमिका को घर की चार दिवारी के अंदर तक ही सीमित कर दिया गया है उसे अपनी क्षमताओं का पूरा विकास करने का अवसर ही नहीं मिलता परिवार में बच्चों का समाजीकरण इस प्रकार किया जाता है कि स्त्री पर पुरुष का प्रभु बना रहे परिवार में लड़कियों के मुका**करना अति की**बले लड़कों को हर प्रकार से प्राथमिकता दी जाती है जिसका विपरीत असर लड़कियों पर पढ़ना स्वाभाविक है अतः नारीवादी विचारक परिवार नामक संस्था का विरोध करते हैं

5. स्त्रियों की परंपरावादी भूमिका में परिवर्तन. स्त्रीवादी स्त्रियों द्वारा परंपरावादी कार्य घर का 3 सेवा करना बच्चे पैदा करना तथा उनका पालन पोषण करना आदि किए जाने के विरुद्ध है उनका यह कहना है कि स्त्रियों की यह भूमिका कोई देवी आदेश नहीं है बल्कि पुरुषों द्वारा बढ़ाई हुई है और स्त्रियां जब तक स्वतंत्र नहीं हो सकती जब तक उनकी इस भूमिका में परिवर्तन ने लाया जाए

6. एक पति एक पत्नी विवाह का विरोध. स्त्री वादी एक पति पत्नी विवाह की प्रथा के विरुद्ध है उसका कहना है कि इस प्रथा के अंतर्गत स्त्री अपने पति की राशि बनकर रहती है तथा उसकी सारी आयु अपने पति की सेवा बच्चों का पालन पोषण तथा घर के अन्य कार्यों को करने में ही बीत जाती है अतः स्त्री को इस बार राजस्थान की स्थिति करने के लिए विभाग की इस प्रथा का अंत होना चाहिए

7. बच्चों की सार्वजनिक देखभाल. स्त्री वीडियो के अनुसार बच्चों के पालन पोषण की जिम्मेदारी समाज की होनी चाहिए बच्चों को जन्म देने तथा उनका पालन पोषण करने के लिए विशेष उपचार ग्रहों की व्यवस्था होनी चाहिए

जिनमें बच्चों की देखभाल करने की जिम्मेदारी प्रशिक्षित नर्सों की होनी चाहिए जो सामूहिक रूप से उन बच्चों की देखभाल करें

8. लैंगिक स्वतंत्रता. उग्र उग्रस्तिवादी और स्त्रियों को पूर्ण लैंगिक स्वतंत्रता प्रदान किए जाने का भी समर्थन करते हैं उनका कहना है कि स्त्रियों को अपनी इच्छा अनुसार यौन संबंध स्थापित करते तथा उन्हें समाप्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए उनके अनुसार कामवासना की पूर्ति एक निजी मामला है जिसमें समाज को तब तक किसी भी प्रकार का हकीकत नहीं करना चाहिए जब तक इसे दूसरों को कोई हानि ना हो तथा स्त्री को अपनी इच्छा अनुसार किसी भी समय किसी भी पुरुष के साथ यौन संबंध जोड़ने तथा तोड़ने की स्वतंत्रता होनी चाहिए

9. निजी संपत्तियों का विरोध . स्त्री वादी निजी संपत्ति के अधिकार को भी स्त्री की अधिकता का एक मुख्य कारण मानते हैं पेयजल ने लिखा है कि पुरुष अपनी निजी संपत्ति को अपने शुद्ध वंशज तक पहुंचाने के लिए स्त्री को विवाह द्वारा अपना दास बनाकर उसे बच्चे पैदा करने की मशीन बनाकर रखना है तथा उनके विचार है कि स्त्री की स्वतंत्रता के लिए निजी संपत्ति के अधिकार को समाप्त करना आवश्यक है मैडम कैसी चल है तेरी कैसे मटक मटक के गुंजन कोई गुंजन मटक के चल रही है बताओ

10. स्त्रियों की आर्थिक स्वयं निर्भरता. स्त्री वीडियो के अनुसार स्त्री पर पुरुष को प्रभुत्व का एक मुख्य कारण स्त्री की पुरुष पर आर्थिक निर्भरता है इसलिए स्त्री को पुरुष से स्वतंत्रता दिलाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाया जाए पुरुष की भांति स्त्रियों को भी उद्योग धंधा में लगाना चाहिए तथा उन्हें पुरुषों के समान ही शिक्षित करना चाहिए ताकि वह भी नौकरी अथवा कोई अन्य व्यवसाय डॉक्टरी वकालत आदि कर सके

11. स्त्रियां एक उत्पीड़न वर्ग है. स्त्री वीडियो का कहना है कि स्त्रियां समाज का उत्पीड़ित वर्ग है और लगभग सभी समाजों में विशेषण का शिकार है परंपरागत पितृ प्रधान परिवार में उनका कोई कानूनी दर्जा नहीं था वे संपत्ति की मालकिन नहीं बन सकती थी और नहीं वे नौकरी आदि करके आत्मनिर्भर बन सकती थी आधुनिक समय में भी स्त्रियों को जो अधिकार प्राप्त हैं यह पुरुषों के अधिकारों से कम है आज भी अधितर कर स्त्रियां अपने परंपरागत कार्यों घर का काम कार्य करना बच्चे पैदा करना तथा उनका पालन पोषण करना तथा घर में पुरुषों की सेवा करना आदि में लगी हुई है अधिकतर स्त्रियां आज भी अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति को के लिए पुरुषों पर निर्भर है

प्रश्न 4. पर्यावरण की राजनीति पर पूर्वी एवं पश्चिमी देशों के विचारों का वर्णन कीजिए.

Ans. आज के आधुनिक युग में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में जिन विषयों ने महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण किया है उनमें से पर्यावरण की राजनीति भी एक महत्वपूर्ण विषय है पर्यावरण का अध्ययन जीव विज्ञान से आरंभ हुआ लेकिन वर्तमान में यह सभी विषयों में पढ़ा और पढ़ाया जाता है क्योंकि यह मनुष्य के अस्तित्व और उसके भविष्य से संबंधित है अतः राजनीति में भी स्वाभाविक रूप से इसका अध्ययन अनिवार्य हो जाता है पर्यावरण को एक विवाद का बनाने और विद्वानों का ध्यान इसकी और आकर्षित करने में संचार माध्यमों ने भी काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

पर्यावरण की राजनीति को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दो विरोधी दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं इनमें से एक दूसरे पर परस्पर आरोप लगाए गए थे उन दो पक्षों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है

पूर्वी देशों का पाश्चात्य देशों पर आप. भारत सहित अनेक विकासशील देशों का यह विचार है कि पाश्चात्य देशों के भौतिकवाद और खाओ पियो हो आनंद करो की नीति और विचारों ने पर्यावरण के अधिक से अधिक शोषण के लिए व्यक्ति को प्रेरित किया है पाश्चात्य देशों किया धरना गलत है कि पृथ्वी पर सभी वस्तुएं पर्याप्त मात्रा में है और व्यक्ति इस पृथ्वी का सबसे विकसित जीव हैऔर उसे इसकी सभी वस्तुओं के उपभोग का अधिकार है पूर्वी देशों की मान्यता है कि पर्यावरण को मनुष्य की नहीं अपितु मनुष्य को पर्यावरण की आवश्यकता है मनुष्य रहे पर्यावरण को मनुष्य के बाद भी रहेगा लेकिन यदि पर्यावरण ना हो तो मनुष्य का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा पूर्वी देशों का यह भी आरोप है कि पाश्चात्य देशों में विश्व की **20%** से **30%** की जनसंख्या रहती है और उनके पास विश्व के **70%** से **80%** तक प्राकृतिक साधन मौजूद है जबकि अन्य एशिया एवं अफ्रीका के देशों में विश्व की **70** से **80%** तक जनसंख्या रहती है और उनके पास विश्व के सिर्फ **20%** से **30%** तक प्राकृतिक साधन नहीं है अतः पर्यावरण के प्रति अधिक उत्तरदायित्व भी इन्हीं पाश्चात्य देशों का है उन्हें पर्यावरण संरक्षण की नई तकनीक के पूर्व के देशों को उपलब्ध करानी चाहिए

2. **पश्चात देश का पूर्वी देशों पर आरोप.** जिस प्रकार से पूर्व के देश पाश्चात्य देशों पर आरोप लगाते हैं इस प्रकार से पश्चात देश पूरे देश पर आरोप लगाते हैं उनकी घटिया तकनीक अधिक जनसंख्या पर्यावरण के प्रति जानकारी का अभाव कम आर्थिक विकास दर आदि कारक पर्यावरण के पतन के लिए अधिक उत्तरदाई है उनका विचार है कि मानव अधिकारों और पक्ष क्यों मूल्यों को स्वीकार करके ही पर्यावरण को सुरक्षित बनाया जा सकता है

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयास.

3 दिसंबर **1968** को संयुक्त राष्ट्र मसवानी एक रिश्ता पारित करके पर्यावरण पर एक सम्मेलन के आयोजन करने लिया यह सम्मेलन **1972** में स्टाफ फॉर्म में आयोजित हुआ **1972** के सम्मेलन से ही पर्यावरण के लिए प्रयास आरंभ हुए **1992** में ब्राज़ील की राजधानी रियो डी जेनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन हुआ

1. **मानवीय पर्यावरण का स्टाफ हम शिखर सम्मेलन. 5** जून से **16** जून **1972** का तक स्टॉकहोम में पर्यावरण सुरक्षा के लिए एक सम्मेलन का आयोजन हुआ

1. **पर्यावरण के महत्व.** इसमें यह माना गया कि पर्यावरण प्रति व्यक्ति का स्वाभाविक अधिकार है इस प्रकार से यह प्रत्येक व्यक्ति एवं राष्ट्र का कर्तव्य है कि पर्यावरण सुरक्षा की जाए

2. **पर्यावरण संतुलन.** संतुलित विकास के मार्ग को अपनाते हुए पर्यावरण संरक्षण के उपाय किया जाए पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक क्षेत्र की पहचान कर नियम बनाया जाए और उन्हें व्यवहार में लागू किया जाए

3. **विश्व पर्यावरण दिवस.** इस सम्मेलन में अभी सिफारिश की गई कि प्रत्येक वर्ष **5** जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाए जिससे कि लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जा सके

4. **परमाणु परीक्षण पर रोक**. परमाणु परीक्षण के दुष्प्रभावों को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि वायुमंडल में पर्यावरण परीक्षण पर प्रतिबंध लगाना जाना चाहिए

5. **समुद्र की स्वच्छता**. समुद्र में रसायन युक्त अथवा गंदा पानी में डाला जाए

6**. शोध पर बाल**. सम्मेलन में माना गया कि आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके पर्यावरण प्रदूषण के लिए उत्तरदाई कारकों की खोज की जाए

7. **पर्यावरण शिक्षा.** पर्यावरण को अध्ययन के विषय के रूप में मान्यता प्रदान की जाए

8. **पर्यावरण एवं विकास**. मनुष्य की आवश्यकता केवल विकास ही नहीं अभी तो पर्यावरण भी है अतः विकास के ऐसे मापदंड तैयार किया जाए जिससे कि पर्यावरण को हानि नहीं हो.

.॥ **नैरोबी घोषणा.** नैरोबी में **1982** में स्टॉकहोम सम्मेलन की दसवीं वर्षगांठ का आयोजन किया गया एवं इस अवसर पर पर्यावरण की सुरक्षा के संदर्भ में विभिन्न समझौते को स्वीकार किया गया इसमें विलुप्त वन्य जीवों के व्यापार से संबंधित प्रावधान अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक संपदा खुले समुद्र में प्रदूषण आदि से संबंधित प्रावधानों को स्वीकार किया गया स्टॉक फॉर्म सम्मेलन की सिफारिश के परिणाम स्वरूप भी संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का गठन किया गया और इसका मुख्यालय नैरोबी में ही स्थापित किया गया

।।।. रियो उद्घोषणा. स्टॉकहोम सम्मेलन के **20** वर्ष बाद ब्राजील की राजधानी देव डी जेनेरियो में संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में पृथ्वी शिखर सम्मेलन का आयोजन हुआ इसका आयोजन विकास एवं पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के द्वारा **3** जून से **14** जून **1992** तक किया गया इसमें **172** देशों ने भाग दिया जिनमें से **108** देश के राष्ट्रीय अध्यक्षों ने इसमें भागीदारी की.

1. **संतुलित विकास मानव विकास का केंद्रीय विषय.** संतुलित विकास के लिए मानव प्राणी चिंतन का केंद्रीय विषय है मानवता को प्रकृति के साथ एक स्वस्थ रचनात्मक जीवन जीने का अधिकार है

2. विकास भविष्य के पर्यावरण से संबंधित.विकास के अधिकार का प्रयोग किस प्रकार से करना चाहिए जिससे कि वर्तमान और भविष्य के विकास एवं पर्यावरण को भाभी वीडियो के लिए भी प्राप्त किया जा सके

3. **गरीबों का उन्मूलन.**

4. विकासशील एवं विकसित देशों को प्राथमिकता.

5. वैश्विक सहयोग की होना का विकास.

6. जनसंख्या नीति का निर्धारण.

7. समिति एवं वैज्ञानिक सहयोग.

8. नागरिकों की भूमिका.

9. राष्ट्रीय कानून का निर्माण.

10. खुली अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना.

11. राष्ट्रों का उत्तरदायित्व.

12. अंतर्राष्ट्रीय मापदंड

13. सूचना तंत्र.

14 विचार विमर्श.

15 महिलाओं की भूमिका.

16. युवाओं की भूमिका.

I**v क्योंतो बैठक.** पर्यावरण के प्रश्न को लेकर तीसरी बड़ी बैठक जापान के शहर कीटों में एक से **11** दिसंबर **1997** तक आयोजित हुई इसमें कुल **150** देश में भाग दिया एक बीच बैठक में अनेक पर्यावरण से संबंधित प्रश्नों पर विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य गहरे मतभेद वर्कर सामने आए लेकिन अंत में क्योटो घोषणा के साथ के बैठक समाप्त हुई

1. ग्रीनहाउस गैस के संबंध में निर्णय लिया गया कि सभी देश मिलकर इसमें **5.2** परसेंट की कमी करेंगे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अमेरिका **7%** यूरोपियन संघ के देश **8%** जापान एवं कनाडा **6%** ऑस्ट्रेलिया ऑपरेशन तथा रूस वर्तमाब्यूनिशन स्थिति को बनाए रखेगी यह उद्देश्य **1990** की तुलना में **2002** तक प्राप्त करना निश्चित किया गया

2. विकासशील देशों को एक सीमा तक इन देशों को पर्यावरण में छोड़ने का अधिकार मिला उन्हें उनकी मात्रा को मापने के लिए कहा गया

V. **बेयोंसआयस बैठक.** बेयोंसआयस बैठक मैं यह बैठक छोटा घोषणा की समीक्षा के लिए की गई इसमें कुछ विकसित करने को का अपने पर बोल दिया गया इसमें सबसे विशेष बात यह थी कि जो देश पर्यावरण में इन गैसों का हिसाब नहीं कर रहे हैं उन्हें अपने हिस्से का कोटा देखने का अधिकार दिया गया विकासशील देशों पर विशेष कर भारत में इस बात पर बोल दिया की आवश्यकता और विलासिता में अंतर करते हुए यह निश्चित किया जाना चाहिए की विनाशिता के कारण वायुमंडल में गैसों का हिसाब ना हो और आवश्यकता के कारण उन्हें छोड़ने से रोक न जाए

प्रश्न 5 विनशेंट आर्थर स्मिथ का संक्षिप्त परिचय दीजिए उनके इतिहास दर्शन के विषय में आप क्या जानते है।

Ans.**विनशेंट आर्थर स्मिथ.** कनिंघम की भांति भारतीय इतिहास में सुन अनुराग रखने वाली दूसरे विदेशी व्यक्ति थे जिनका जन्म **8** जून **1848** ई को डवलिंग में हुआ था वे आयरिस थे और अपने पिता की **13** संतानों में से पांचवे थे उनके पिता एक विल स्मिथ प्राचीन अवशेषों में रुचि रखा करते थे जिनके प्रभाव आगे चलकर उनके पुत्र विंसेंट आर्थर स्मिथ के व्यवहार में भी दृष्टिगोचर होता है अनेक संतानों के होते हुए भी एक विल स्मिथ ने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देने की व्यवस्था कर रखी थी विंसेंट आर्थर स्मिथ ने एम ए तक की शिक्षा ट्रिनिटी कॉलेज से ही प्राप्त की और ऑक्सफोर्ड से डि लीट किया **1871** में वह आई सी एस की परीक्षा पास कर चुके थे उनका विवाह सालिगों के विलियम किल्फ़ोर्ड की पुत्री मेरी एलिजाबेथ से हुआ था जिसके उनको तीन पुत्र तथा एक पुत्र यानी कुल चार संताने थी

आईपीएस के रूप में सुमित को भारत के पश्चिम उत्तर प्रति और अवध प्रांत का वरिष्ठ अधिकारी बनाया गया अवध प्रांत के मुख्य सचिव और बंदोबस्त अधिकारी भी रहे यहां रहते हुए उन्हें गंगा घाटी के पर प्राचीन अवशेष स्थलों का अवलोकन करने तथा उनके विषय में अध्ययन करने का अवसर मिला तो भारत की प्राचीनता के प्रति उनकी अभिरुचि जागृत हुई और भी एक अधिकारी के साथ-साथ एक इतिहासकार की भूमिका भी निभाते रहे सन **1900** में सेवा मुक्ति के बाद भी उनका संबंध ऑक्सफोर्ड के इंडियन इंस्टीट्यूट से निरंतर बना रहा है **1918** ईस्वी में उन्हें इस कार्य के लिए स्वर्ण पदक भी मिला वह रॉयल एशियाटिक सोसाइटी लंदन के सदस्य तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के फेलो भी रहे ऑक्सफोर्ड के भारतीय इतिहास विभाग के रीडर पद पर उनकी नियुक्ति न होने से कुछ दुखी अवश्य थे किंतु **1919** में उन्हें सी आई ई का पद प्रदान किया गया **6** फरवरी **1920** ई को ऑक्सफोर्ड में ही दिवंगत हो गए थे
उनकी प्रमुख रचना इस प्रकार है भारत का बौद्ध सम्राट अशोक ,भारत का प्रारंभिक इतिहास, भारतीय संग्रहालय में सिको की सूची, लंका और भारत में ललित कला का इतिहास, भारत का ऑक्सफोर्ड इतिहास, महान मुगल सम्राट अकबर एवं अनेक शोध निबंध
इतिहास दर्शन स्मिथ का इतिहास दर्शन व्यवहारिक पक्ष प्रस्तुत करता हुआ दिखाई देता है उनके अनुसार इतिहास का मूल्य और रुचि विशेषताएं उसे आधार पर निर्भर करती है कि अतीत के द्वारा किस सीमा तक वर्तमान उदय भट होता है इतिहास की उपयोगिता वादी व्यावहारिक अवधारणा का अर्थ बदलते हुए भी कहते हैं कि वर्तमान के ज्ञान के लिए अतीत का एक साधन के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए और भविष्य का नियोजन यह अर्थ रखता है कि उसके लिए इतिहास का व्यावहारिक उपयोग किया जाए किंतु प्राचीन भारत के इतिहास प्रति वे अधिक उदाहरण नहीं होते उन्होंने उत्तरी दक्षिणी भारत की संस्कृतियों में भेद करके उसे ऐतिहासिक तथ्यों की विपरीत सिद्ध किया है और इसी कारण से उनकी आलोचना भी की गई है कि उनको भारतीय द्रव्य भाषा का कोई ज्ञान नहीं था
स्मिथ की ऐतिहासिक पद्धति आधुनिक थी किंतु उन्होंने पश्चिमी विचारों से प्रभावित तत्वों को अनावश्यक रूप से इतिहास शास्त्र में भरने का प्रयास किया था फिर भी उनकी यह एक विशेषता ही थी कि उन्होंने साहित्य ब्राह्मण बहुत जैन धर्म की मित्र तथा आख्यानों को अपने इतिहास लेखन से दूर रखते हुए राजनीतिक इतिहास को तिथि क्रम से प्रस्तुत का प्रयास किया उनके ऐतिहासिक पद्धति में वंशावली और नरेशों का विवरण मात्र ही नहीं मिलता अपितु उन्होंने उनका परीक्षण और विश्लेषण भी किया है
स्मिथ वस्तुतः एक इतिहासकार थे इस संबंध में प्रोफेसर सी के मजूमदार लिखते हैं एक इतिहासकार के रूप में स्मिथ का व्यक्तित्व एक वैज्ञानिक और कलाकार का सम्मानित रूप था वह एक वास्तविक अन्वेषक थे और विषय की गंभीरता और कार्य कारण सिद्धांत पद्धती उनकी मुख्य विशेषता थी जो एक इतिहासकार के लिए निदान आवश्यक है
डॉ वसम ने स्मिथ को एक वीर पूजन इतिहासकार कहा क्योंकि उन्होंने अनेक महान भारतीय शासको के राजनीतिक पशुओं को प्रस्तुत किया है भारतीय इतिहास की व्याख्या करने में उन्होंने प्राय दो शब्दों का प्रयोग अधिक किया है और टॉक कृषि और डेसपोटिज्म इसके आधार पर मानते हैं कि भारत में प्रगति नहीं की है क्योंकि उनकी सामाजिक

राजनीतिक रचनाओं में तंत्र और अनियंत्रित सामाजिक व्यवस्था प्रचलित थी उन्होंने एक स्थान पर डिस्पति को ही ओरिएंटल मां दिया है

स्मिथ वे पहले अंग्रेज थे जिन्होंने अंग्रेजी भाषा में भारतीय सम्राटों पर एक पुस्तक लिखी थी उनके लेखन की विशेषता यह थी कि उन्होंने अशोक के अभिलेखों का अंग्रेज़ी अनुवाद और मूल दोनों ही दिया भारत के राजनीतिक इतिहास के 18 साड़ियों की मुख्य घटनाओं का विवरण प्रस्तुत कर स्मिथ ने पश्चिमी देशों को भारतीय इतिहास से अंतरिक्ष करने का अद्भुत प्रयास किया था मुद्रा शास्त्र के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है कि आज भी शक छात्रों तथा जिज्ञासुओं के लिए महत्व की वस्तु है उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह समीक्षात्मक और विश्लेषणात्मक लिखा इससे भारतीय इतिहासकारों को दिशा दिशा में बहुत सुविधा मिली थी

प्रश्न 6. राष्ट्रवादी और संप्रदायवादी इतिहास लेखन में फर्क बताइए

Ans. पेशेवर राष्ट्रवादी इतिहासकारों और कई आरंभिक राष्ट्रवादियों ने अप्रत्यक्ष रूप से संप्रदाय वादी इतिहास लेखन को बढ़ावा दिया भारतीय जनता को प्रेरित करने के लिए उन्होंने नायकों की खोज की और उन्होंने मध्यकाल के उन व्यक्तियों को नायक के रूप में खड़ा किया जिन्होंने अपने राज्यों और क्षेत्र की रक्षा के लिए और शोषण के खिलाफ लड़ाइयां लड़ी ऐसा उन्होंने इसलिए किया क्योंकि एक और वह अपने राष्ट्रवाद को अभिव्यक्त करना चाहते थे और दूसरी और शिक्षाविद और आरंभिक राष्ट्रवादी ब्रिटिश शासको को नाराज भी नहीं करना चाहते थे यदि शिक्षाविद उन व्यक्तियों को नायक के रूप में खड़ा करते जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी तो उन्हें अंग्रेजों का को भजन बनना पड़ता उदाहरण के लिए अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला टीपू सुल्तान टाटा टोपी और झांसी की रानी के पक्ष में किए गए लेखन पर तुरंत प्रतिबंध लगा दिया मैंने एक जगह पर इसे अक्षांश राष्ट्रवाद कहा है दुर्भाग्य वास संप्रदाय वीडियो ने इस प्रश्न राष्ट्रवाद का उपयोग भारतीय इतिहास संबंधी अपने दृष्टिकोण के प्रचार प्रसार में किया उन्होंने राणा प्रताप शिवाजी गुरु गोविंद सिंह की प्रशंसा इसलिए नहीं की की उन्होंने शोषण के खिलाफ आवाज उठाई थी और अपनी जनता का क्षेत्र की रक्षा करने के लिए जी जान बल्कि उचित संसार इसलिए कि गई कि उन्होंने विदेशियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी इसलिए उन्हें राष्ट्र नायक माना गया परंतु मुगल विदेशी कैसे थे मुगलों को किसी भी परिभाषा कहते हैं विदेशी नहीं माना जा सकता केवल मुसलमान और गुरु गोविंद सिंह को रात नायक घोषित किया बल्कि अशोक अखबार टीपू सुल्तान झांसी की रानी और अन्य उन सभी हिंदुओं या मुसलमान को नायक रुपए खड़ा किया जिन्होंने 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ अपनी तलवार उठाई थी बाद में खुदीराम बोस लोकमान्य तिलक मौलाना अब्दुल कलाम आजाद महात्मा गांधी जवाहरलाल नेहरू सुभाष चंद्र बोस खान अब्दुल गफ्फार खान भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद राष्ट्रवादियों के नायक बने

अतीत की व्याख्या करने में राष्ट्रवादी और संप्रदायवादी एक और मामले में भी एक दूसरे से अलग है राष्ट्रवादियों ने प्राचीन भारतीय समाज राजनीति और संस्कृति को सकारात्मक रूप में देखा है और उसकी प्रशंसा की है परंतु इसके साथ उन्होंने मध्यकाल का भी सकारात्मक चित्र प्रस्तुत किया है और इसके साथ-साथ प्राचीन और मध्ययुग दोनों के नकारात्मक पहलुओं की आलोचना भी की है राष्ट्रवादियों ने लोगों में राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्म गौरव पैदा करने

के लिए अतीत का गुणगान किया उन्होंने अपने इस प्रयास के द्वारा उसे उपनिषवादी स्कूल से लोहा लिया जिसमें भारतीय परंपरा को नीचा दिखाने की कोशिश की गई थी और निर्भरता तथा छोटे होने की मानसिकता का प्रतिकार करने के लिए उन्होंने यह रास्ता अपनाया हिंदू संप्रदाय वीडियो में मध्यकाल में आई गिरावट और पतन को दिखाने के लिए अतीत का गौरव गान किया और उसे सामने रखा और इस प्रकार मुसलमान विरोधी भावनाओं को भड़काया राष्ट्रवादी यह बताने के लिए अतीत की ओर गए कि भारत में काफी पहले से लोकतंत्र मौजूद था और इसलिए भारत आधुनिक संसदीय लोकतंत्र आधुनिक नागरिक और राजनीतिक अधिकारों चुनाव के द्वारा लोकप्रिय सरकार के गठन और स्वशासन के बिल्कुल काबिल थाआरसी मजूमदार जैसे राष्ट्रवादियों ने आरंभ में प्राचीन भारतीय राजनीतिक व्यवस्था और सामाजिक जीवन के लोकतांत्रिक संवैधानिक गैर निरंकुश और यहां तक की गणतंत्र गैर धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष तथा तर्कसंगत तत्वों की को रेखांकित किया इस प्रकार राष्ट्रवादियों ने साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्राचीन भारतीय समाज का गौरव कॉल किया और इसका उपयोग उनके खिलाफ हथियार उठाने के रूप में किया है वैज्ञानिक विशेषताओं से युक्त होने और बहुभाषीय बहु सांस्कृतिक बहुत धार्मिक और बहू जातीयता वाले देश में इसके दुरुपयोग की संभावनाओं के बावजूद इसमें कुछ खास ऐतिहासिक प्रगतिशील तत्व शामिल थे इसके अलावा राष्ट्रवादियों ने मूल्यांकन के लिए और अपने विचारों के विकास के लिए वैज्ञानिक मानदंड अपनाया दूसरी ओर संप्रदाय वीडियो ने सांप्रदायिक भावनाओं को पान पानी और उन्हें मजबूत बनाने के लिए अतीत का सहारा लिया उन्होंने प्राचीन भारतीय समाज और राजनीति तथा सामाजिक व्यवस्था की नकारात्मक प्रवृत्तियों की भी प्रशंसा की और इसके लिए उनकी आलोचना भी की

संप्रदायवादीयो ने उपनिवेशवाद की भूमिका को दरकिनार किया और दूसरे राजनीतिक समुदाय से संबंध स्थापित करने के नकारात्मक प्रभाव पर अधिक बल दिया वे आमतौर पर राष्ट्रीय आंदोलन और धर्मनिरपेक्षता से सहमत नहीं थी और इसकी आलोचना करते थे एक और जहां हिंदू संप्रदाय वीडियो ने इस मुस्लिम समर्थक और कम से कम मुस्लिम तुष्टिकरण मन वही मुस्लिम संप्रदाय संप्रदाय वीडियो में इसे मुसलमान विरोधी या कम से कम हिंदुओं के नियंत्रण में मन और इस प्रकार इस हिंदू वारटसी के एक औजार के रूप में देखा गया हिंदू संप्रदायवादी खास तौर पर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के नरमपंथी राष्ट्रवादियों की आलोचक थे जिन्होंने उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना की और आधुनिक धर्मनिरपेक्षता की आधारशिला रखी उपनिवेशवाद की आलोचना करते हुए मुख्य तौर पर दोनों धर्म में से जुड़े संप्रदाय वीडियो ने उपनिवेशवाद की एक स्वर में इसलिए आलोचना की क्योंकि उन्होंने चरक संहिता और विज्ञान और वैज्ञानिकता के तर्क के दृष्टिकोण पर आधारित आधुनिकता या आधुनिक चिंतन की शुरुआत की

संप्रदाय वीडियो ने राष्ट्रवाद को आर्थिक या राजनीतिक संदर्भ में नहीं बल्कि सांस्कृतिक संदर्भ में ही परिभाषित किया यानी हिंदू या मुसलमान संस्कृति पर आधारित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में इसे सामने रखा गया इसके परिणाम स्वरुप उन्होंने दादा भाई नौरोजी रानाडे और सुरेंद्रनाथ बनर्जी जैसे आरंभिक राष्ट्रीय नेताओं से नहीं बल्कि बंकिम चंद्र और स्वामी दयानंद और सैयद अहमद खान से आधुनिक राष्ट्र की शुरुआत मानी

प्रश्न 7. कैंब्रिज स्कूल की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए

Ans. कैंब्रिज स्कूल में स्थानीयता और वहां मौजूद संबंधों पर विशेष बल दिया गया है का बेली ने 19वीं शताब्दी के मध्य में इलाहाबाद शहर की राजनीति का विश्लेषण करते हुए स्थानीय राजनीति का हवाला दिया है और बताया है कि किस प्रकार प्रभावशाली लोग अपने प्रभाव में रहने वाले लोगों को संतुष्ट करने का प्रयास करते हैं शहर में बड़े-बड़े सेट साहूकार रहा करते थे जिन्हें रईस यानी प्रसिद्ध व्यक्ति का दर्जा प्राप्त था इन सेठ साहूकारों और रईसों के विभिन्न प्रकार के प्रभाव क्षेत्र थे जिनमें कई प्रकार के समूह शामिल थे इन रईसों की संभव में सभी जातियों और समुदायों के लोग थे बाद में यही संपर्क इलाहाबाद की राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण हो गया

मुंबई की राजनीति का अध्ययन करते हुए गार्डन जॉनसन ने इस सहमति व्यक्ति प्रत्येक भारतीय राजनीतिज्ञ की एक खास विशिष्ट था यह थी कि प्रत्येक राजनीतिज्ञ को भारतीय समाज के सभी स्तरों से जुड़े विविध और एक दूसरे के विपरीत हितों की देखभाल करनी पड़ती थी और ऐसा करते हुए वर्ग जाति क्षेत्र और धर्म जैसी सीमाओं का अतिक्रमण करते थे अनिल सील ने अपनी पुस्तक लो क्वालिटी प्रोविंस और वसंस की प्रस्तावना के लेख इंपिरियलिज्म एंड नेशनलिज्म इन इंडिया में इसी बात पर विशेष बल दिया था उनके अनुसार राजनीति मूलतः एक स्थानीय मामला था वहां प्रभाव हैसियत और संसाधनों के लिए होड़ मची हुई थी इस कोड में संरक्षक अपने माता को अलग-अलग गुटों में बताकर उनकी मदद करता था इस प्रकार उनके मात्रा में किसी भी प्रकार का ताजमहल या शॉर्टकट नहीं हुआ करती थी इसकी बजाय वे बड़े लोगों और उनके अनुयायियों के संग हुआ करते थे दूसरे शब्दों में भी अच्छा एक दूसरे से जुड़े हुए थे परंतु इनका संबंधी खड़ी रेखा में था ने की पड़ी रेखा स्थानीय टकराव की स्थिति में डार्ले ही किसी जमींदार और जमीदार का शिक्षित और शिक्षित का मुसलमान और मुसलमान का ब्राह्मण और ब्राह्मण का घर छोड़ हुआ करता था हिंदू मुसलमान के साथ काम करते थे ब्राह्मण लोग गैर ब्राह्मणों के साथ मिलकर अच्छा बनाया करते थे

कैंब्रिज व्याख्या के अनुसार राजनीति की जड़ स्थानीयता अर्थात जिला नगर पालिका गांव में निहित होती थी शहर के प्रभावित लोग और गांव के बाहुबली तथा कथित कमजोर साम्राज्यवादी सरकार द्वारा बिना किसी हस्तक्षेप के मामलों का वितरण किया करते थे परंतु 19वीं शताब्दी के अंत और विश्व शताब्दी के आरंभ में स्थिति बदलने लगी डेविड वाशब्रूक के अनुसार प्रगति करने अधिक धन कमाने और अधिक जनकल्याण और अच्छे कार्य करने के लिए साम्राज्य शासन ने कई नौकरशाही और संवैधानिक सुधार किय किया जिसे ज्यादा से ज्यादास्थानीय राजनीतकियों को स्थानीय राजनीति छोड़कर केंद्र की ओर बढ़ने के लिए बात किया जॉन गले या का मन था कि किसी सरकारी हस्तक्षे से भारतीय राजनीति का काम करने का ढंग बदल गया उन्होंने गलतफहमी दूर करते हुए कहा कि इसका मतलब यह है नहीं है कि भारतीय राजनीति को सामाजिक समूह की आवश्यकताओं के अनुसार कार्यक्रमों के साथ दलों से जोड़ दिया गया अभी भी संरक्षक और आश्रितों के संबंधों की प्रमुखता थी इसके अलावा स्थानीय जगह पर पहले श्रमिकों और विभिन्न गुटों के बीच संधि की उलट फिर अभी भी प्रमुख तत्व बने हुए थे इस प्रकार की विभिन्न प्रकार की सत्ता ही एकताओं के ऊपर स्थित थे इसके बावजूद एक परिवर्तन यह हुआ कि अधिक से अधिक इलाकों का

गठबंधन हुआ और इन्हें राजनीति के बड़े क्षेत्र से जोड़ा गया इन चुनावी पद्धतियों के फल स्वरुप प्रशासनिक परिवर्तन भी करने पड़े

अपनी पुस्तक को प्रस्तावना में अनिल सिंह ने भी यही बात कही है केंद्रीकृत और प्रतिनिधि सरकार बनने से अब भारत वासियों के लिए राजनीतिक लाभ केवल स्थानीय इलाकोंटा की सीमित नहीं रह गया सरकार के लिए केंद्र से ज्यादा से ज्यादा मोलभाव करने की बढ़ती शक्ति से प्रांतीय और अखिल भारतीय राजनीति का निर्माण हुआगांव जिला और छोटे शहरों की राजनीति बढ़कर केंद्र तक पहुंचने लगी परंतु मद्रास नेटिव संगठन या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसे राजनीतिक संगठन प्रति और केंद्र में राजनीति का नया खेल खेलने लगे सरकार के औपचारिक ढांचे ने राजनीति का ढांचा निर्मित किया और इसी ढांचे के तहत काम करते हुए भारतवासी सता और संरक्षण के वितरण का निर्धारण कर सकते थे

सीजी बेकार के अनुसार अभी तक स्थानीय प्रभावशाली व्यक्ति अपनी सट्टा का प्रयोग मनमर्जी से करता था किंतु अब उसे ब्रिटिश राज के नए प्रशासनिक और प्रतिनिधि ढांचे के अनुसार बदलना पड़ा बड़ी चौहद्दियों के आधार पर बने संगठनों पर आधारित राष्ट्रीय राजनीतिक ढांचे के अनुसार उदाहरण बदलना पड़ा जस्टिस पार्टी हिंदू महासभा अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कुछ ऐसे ही बड़े संगठन थे कैंब्रिज स्कूल से जुड़े विद्वानों का मानना था कि गांधी जी के आने के बाद राजनीतिक बदनाम तो आया परंतु यह है अभी संभ्रांत लोगों के हाथों में था यह है जन आंदोलन नहीं बना उनके अनुसार प्रत्येक चरण में किए जाने वाले संवैधानिक सुधार अखिल भारतीय राजनीति को सपोर्ट की प्रदान करते रहे मॉन्टफोर्ड सुधारो ने असहयोग आंदोलन के लिए साइमन कमीशन ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन और क्रिप्स मिशन ने भारत छोड़ो आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया जब भी सरकार केंद्र में कोई नया सुधार लागू करने का प्रस्ताव करती थी जो स्थानीय इलाकों में संरक्षण के बंटवारे को प्रभावित करता था उसी समय राजनीतिज्ञ नए राजनीतिक आंदोलन छोड़ने को उठ खड़े होते थे गोल्डन जॉनसन के अनुसार भारत में राष्ट्रवाद का विकास कल अनुक्रम नहीं दिखता है सरकार की राष्ट्रीय कार्रवाइयों के साथ राष्ट्रीय आंदोलन में भी उतार-चढ़ाव होता रहा

प्रश्न **8. यूरोपियन सामंतवाद के वाद विवाद पर टिप्पणी कीजिए**

Ans. सामंतवाद मध्यकालीन यूरोप की भूमि वितरण पर आधारित एक सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था थी इसका यूरोप में विकास **10**वीं से **13**वीं शताब्दी तक हुआ पुनर्जागरण काल तथा राष्ट्रीय राज्यों के उदय तक यह व्यवस्था यूरोप में बनी रही इसका विकास यूरोप की तत्कालीन परिस्थितियों के कारण हुआ था **410** ईस्वी में जर्मन जातियों ने आक्रमण करके रोमन साम्राज्य को चीनी भिन्न कर दिया जिससे सारे यूरोप में व्यवस्था एवं अराजकता का प्रादुर्भाव हुआ जर्मन जातियों ने सबसे महत्वपूर्ण फ्राइंग जन समुदाय था जिसने अपने सी नेट के नेतृत्व में आधुनिक फ्रांस बेल्जियम पश्चिमी जर्मनी तथा नीदरलैंड की क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित कर दिया जिसे गाल कहा जाता था ईसाई धर्म को मानता था उसने पेरिस को अपनी राजधानी बनाया उसके उत्तराधिकारियों से पेपर ले सकता हिंदी टाइपिंग के बाद उसका पुत्र सलमान शासक बना उसने यूरोप से अराजकता को समाप्त कर दिया शांति

व्यवस्था स्थापित की तथा एक विशाल साम्राज्य को स्थापित प्रदान कियासली मन अकेला इतने विशाल साम्राज्य को संचालित नहीं कर सकता था क्योंकि उसे समय यातायात एवं संचार के साधनों का अभाव था उसने उन सेनापतियों या विशेष निकट के व्यक्तियों को बड़े भूभाग प्रदान किया जिन्होंने उसे सैनिक अभियानों में सहायता प्रदान की थी इस प्रकार सामंतवाद का श्री गणेश ट्रांसफर हुआ बाद में धीरे-धीरे यह प्रथा सारे यूरोप में प्रचलित हो गई शर्मन की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार की युद्ध पर उसका साम्राज्य फ्रांस इटली तथा जर्मनी में विभाजित हो गया सरदारों ने विभिन्न भागों में अपना अपना प्रभु स्थापित कर लिया केंद्रीय सत्ता का ह्रास हो गया किसने सामान्य जीवन असुरक्षित हो गया अतः आपसी सहयोग तथा विश्वास की आवश्यकता उत्पन्न हो गई जिसे कालांतर में सामंती व्यवस्था को जन्म दिया

सामंतवाद को इंग्लिश में फैऊदलिज्म कहा जाता है यह जर्मन शब्द क्यूट से बना है जिसका अर्थ भूमि का टुकड़ा होता है भूमि के टुकड़े का स्वामी जागीरदार यूरोप में जब बड़े असम राज्य स्थापित हो गए तो शासको के लिए से सारे क्षेत्र पर नियंत्रण रख पाना कठिन हो गया उन्होंने अपने वंशजों या अधिक निकट के लोगों के बीच राज्य के कुछ भाग बांट दिए इसके बदले में भूमि पानी वाले व्यक्ति को शासन की सैनिक सहायता हेतु निर्धारित सैनिक अपने पास रखने पड़ते थे वह व्यक्ति सामंत कहलाता था

सामंतवाद के उदय के कारण.

1. बड़े राज्यों का उदय.

2. बाहरी आक्रमण.

3. यातायात एवं संचार के साधनों की कमी.

4. अश्वरोही सेवा की आवश्यकता.

5. रोमन प्रथाओं का प्रभाव.

6. धर्म युद्ध.

7. जर्मन आक्रमण.

8. जमींदार प्रथा.

9 व्यापार की सुरक्षा.

10. पादरी वर्ग का उदय.

11. दास प्रथा.

सामंतवाद की विशेषताएं.

1. सामंतवादी त्रिकोण.

2. सामंतों की नियुक्ति.

3. जागीर या मैनर व्यवस्था.

4. समाज के तीन वर्ग.

5. सामंतों के कर्तव्य .

6. सामंतों के अधिकार.

सामंत प्रथा के गुण.

1. राज्य की सुरक्षा.

2. प्रशासनिक सुधार.

3. राजा पर अंकुश.

4. न्याय प्रबंध.

5. सैनिक प्रबंध.

6. नगरों का विकास.

7. आर्थिक विकास.

8. कल का विकास.

9. सूर्य धर्म की उत्पत्ति एवं विकास.

सामंतवाद के दोष.

1. केंद्रीय सत्ता का हास.

2. अधिनायक वाद का उदय

3. सामाजिक वर्ग भेद

4. निम्न वर्ग का शोषण

5. नैतिक पतन

6. राजा तथा प्रजा के बीच संवादहीनता.

7. लगातार युद्ध.

8. व्यापार तथा उद्योगों का विकास ना होना.

सामंतवाद की पतन के कारण.

1. कृषि में परिवर्तन.

2. व्यापारिक वर्ग का उदय.

3. नई वर्ग का उदय.

4. नये तीर्थ स्थलों की स्थापना.

5. आर्थिक व सामाजिक व आसंतुलन.

6. राष्ट्रीय राज्यों का उदय.

7. धर्म युद्ध.

8. कृषकों के विद्रोह.

9. पॉप का विरोध.

प्रश्न 9. प्राचीन भारत में सामंती व्यवस्था की विशेषताओं का मूल्यांकन कीजिए

Ans. सामंतवाद के उदय के साथ कुछ सामान्य विशेषताएं और राजनीतिक तथा आर्थिक प्रभाव प्रतिबिंबित होते हैं उनकी विवेचना करने से निम्नलिखित तत्व आलोक में आते हैं

भूमि दान. गुप्तकालीन लिखो से हमें भूमि दान के उल्लेख मिलते हैं अधिकांश से भूमि दान ब्राह्मणों को दिया गया है इसका उद्देश्य दान करता अथवा उसके पूर्वजों के लिए आध्यात्मिक कल्याण करना था परंतु प्रोफेसर आरएस शर्मा का विचार है कि ब्राह्मणों को दिए जाने वाले भूमि दान का केवल धार्मिक देश ही नहीं था अभी तू एक राजनीतिक आवश्यकता भी थी क्योंकि ब्राह्मणों को प्रतिशत भूमि दान का स्वरूप स्वामी था तथा इस भूमि में राजा के अधिकारी अथवा सैनिक का प्रवेश निषेध था

1. प्रवरसेन द्वितीय का दान लेख. इसका स्पष्टीकरण वाकाटक नरेश प्रवचन द्वितीय के दान लेख में मिलता है इसमें चर्चा की गई है कि दान में दिए गए गांव का उपयोग हजार ब्राह्मण इस शर्त पर कर सकते हैं कि वह साम्राज्य में कोई षड्यंत्र नहीं करेंगे ब्राह्मण का वध नहीं करेंगे चोरी तथा बलात्कार नहीं करेंगे राजाओं को गुमराह नहीं करेंगे युद्ध नहीं करेंगे तथा ग्रामीणों को प्रातंडित नहीं करेंगे अतः इसका उद्देश्य पुरोहितों का केवल समर्थन ही करना नहीं था परंतु ब्राह्मणों के विरोध पर रोक लगाना भी था यदि यह नकारात्मक है फिर भी इसका दृष्टिकोण स्पष्ट से राजनीतिक है पांचवी सदी में युद्ध घोष के अनुसार ब्राह्मण डे के साथ न्यायिक तथा प्रशासकीय अधिकार भी जुड़े थे

2**. बिचौलियों का उदय**. वास्तव में दान करता हूं के उद्देश्य चाहे जो भी रहे हो भूमि दान के कारण ऐसे विचोलियां का उदय हुआ जिन्हें पर्याप्त आर्थिक तथा राजनीतिक शक्तियां प्राप्त थी दंग्रहित ब्राह्मण को संख्या धीरे-धीरे बढ़ने लगी पुरोहित कार्यों के स्थान पर उन्हें राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकार प्राप्त हो गए जिसके कारण प्रशासन की केंद्रीय कारण नृतियां अधिक प्रबल हो गई भूमि दान के साथ-साथ गांव की भूमि से उत्पन्न होने वाली आयु ग्रहीता को सौंप दी जाती थी दान पात्रों में कृषकों को यही आदेश दिया गया है कि वेकर अपने पति को दिन भूपति कृषकों और कृषकों की स्त्रियों से बेकार भी ले सकता था

3**. पल्लवी के पैतृक शासक थारसेन**. **575** इसी में एक दान पत्र द्वारा गृहीत को बेकार लेने का अधिकार दिया गया इसी प्रकार का प्रमाण शीला आदित्य प्रथम के **605** ई के दान पत्र में मिलता है जिसमें यह कहा गया है कि दान में प्राप्त भूमि के साथ-साथ ग्रहीता बेगार भी ले सकते थे

4**. प्रशासनिक प्रभाव.** भूमि दान का अन्य प्रशासन प्रभाव पड़ा कि राजा ने अपनी नियंत्रण को उन स्थानों पर से हटा दिया जो स्थान भूमि दान के रूप में दिए जाते थे भूमि दान के पहले राजा का उत्तरदायित्व जनता की आंतरिक सुरक्षा

शांति व्यवस्था आदि का प्रबंध करना माना जाता था और इसके बदले वही कर प्राप्त करने वाला होता था लेकिन यह दोनों कार्य अब भूमि दान प्राप्त करता के हाथों में चले गए इन्हें सामंत कहा गया पांचवीं शताब्दी तक के अभिलेखों से विदित होता है कि राजा चोरों को दंडित करने का अपना अधिकार नहीं त्यागता था परंतु प्रवृत्ति युगों में चोरों को खंडित करना या परिवार की संपत्ति इत्यादि के झगड़ों पर न्याय देने का अधिकार भी भूमि दान के साथ ब्राह्मणों को हस्तांतरित किया जाने लगा

5**. गुप्त काल के प्रारंभिक चरण में.** उल्लेखनीय की गुप्त काल के प्रारंभिक चरण में गुप्त साम्राज्य की केंद्रीय प्रति में किसी भी सम्राट की अनुमति के बिना स्वयं भूमि दान देने का अधिकार नहीं था परंतु छठी सदी तक आकर हमें ऐसे साक्षी मिलने लगते हैं जहां कुमार मध्य नंदन जैसे सामंत भी साम्राज्य की आजा बिन निवेदन करने लगे अब सामंत अपनी अपनी भूमि के वास्तविक शासक बन गए थे

6. **विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति.** न केवल ब्रह्मदेव भूमि पर ब्राह्मणों की भूमि पति बन सकते जाने से उत्पन्न हुई वर्ण जब गुप्त शासको उपरिक्त कुमार मात्रा इत्यादि जैसे अपने प्रमुख कर्मचारियों को वेतन के बदले में भूमि दान देना प्रारंभ कर दिया और उनके पद क्रम से वंश परंपरागत बनने लगा तब यह ऊपरी और कुमार मात्रा इत्यादि भी सामंतों की तरह स्वतंत्र हो गए.

7. **सैनिक सहायता.** सामान्य रूप से कभी-कभी सामंत लोग राजा को अवसर पड़ने पर सैनिक सहायता भी देते थे की होली में कहा गया है कि हर्ष की सेवा सामंतों की सेवा से युक्त थी इसका प्रभाव यहां तक पद की सम्राट सामंतो पर निर्भर हो गई वे सस्थाई सी रखने लगे इसे केंद्रीय शक्ति शिथिल होती गई

8. **सामंती सी पर राजा की निर्भरता.** धान में दिए गए क्षेत्र से जब भूमि का राजा को प्रत्यक्ष रूप में ने मिलकर सामंतो ब्राह्मण भूपतियों और राज्य के उच्च पदाधिकारी के माध्यम से मिलने लगा तो उसका केंद्रीय कोर्स पर गुरु प्रभाव पड़ा संभावित इसी का यह परिणाम हुआ कि अब राजस्थान विशाल सुना नहीं रख सकता था जिसके कारण वह सामंतिया सी पर अधिक से अधिक निर्भर रहने लगा

9. **बेगम तथा अर्थ दास की स्थिति.** भूमि दान पात्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिल्पी व्यापारी आदि विभिन्न व्यवसाय लोग ग्रहीता की भूमि को छोड़कर अन्यत्र नहीं जा सकते थे सामंतवाद के प्रभाव के बढ़ जाने से गरीब मजदूरों को बेकार और दास बनने जैसी स्थिति का सामना करना पड़ा

10. **आर्थिक दुष्परिणाम.** पूर्व मध्ययुगीन भारत में सामंत प्रथा के आर्थिक दुष्परिणाम का बुरा महत्वपूर्ण है ब्राह्मणों की भूमि दान में तथा सामंतों को जागीर में मिलती थी उसे पर शुद्ध किसको द्वारा बताई पर खेती होती थी इन क्रिस्टीयानो की तुलना यूरोप के कृषि दसों से की गई है जहां भूमि सामंतों को दी जाती थी वहां कृषकों को अनेक प्रकार के कष्टकारी टैक्स देनी पढ़ते थे सामंतिया व्यवस्था के कारण राजा एवं कृषक के मध्य अनेक बिजोलिया होते थे कृषक इन बिचौलियों को खेत की उपज का एक निश्चित भाग देते थे दसवीं तथा 12वीं शताब्दी के लिखे से ज्ञात होता है कि कृषक को राज्य के अनेक कर्मचारी को अपनी उपज का एक अंश देना पड़ता था सामंतिया युग में राजाओं

तथा सामंतों की परस्पर युद्ध के कारण फसल को बहुत हानि उठानी पड़ती थी सुभाषित रन में कुदरत ब्राह्मी वीर के एक परीक्षित में कहा गया है कि भोजपति के अत्याचारों से पीड़ित होकर किसानों ने गांव ही छोड़ दिया था

11.आत्मनिर्भर स्थानीय निकाय का जन्म. डॉ आर एस शर्मा के अनुसार सामंतवाद ने आत्मनिर्भर स्थानीय निकायों को जन्म दिया वात्सायन के कामसूत्र से ज्ञात होता है कि कृषक स्त्रियों को मध्य होकर बुनकर कार्य करना पड़ा ग्रामीणों की आवश्यकता की पूर्ति इन लघु उद्योगों के उत्पादन से होने लगी आत्मनिर्भर स्थानीय निकायों की वृद्धि का स्पष्टीकरण गुप्तोत्तर काल में सिखों के काम प्रचलन से किया जा सकता है इससे आंतरिक व्यापार का हास्य हुआ लोगों को दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्थानीय उत्पादन से हुई केंद्रीय शक्ति के स्थिर हो जाने सिक्कों के काम प्रचलन के फल स्वरुप अधिकारियों को जागीर अथवा भूमि दान में दी जाने लगी

प्रश्न 10. पूंजीवादी शब्द की व्याख्या कीजिए यूरोप में इसके उदय एवं विकास का विवरण दें.

Ans. पूंजीवाद आधुनिक युग की अर्थव्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है **15**वीं साड़ी में यूरोप में तकनीकी विकास के फल स्वरुप जो नई अर्थव्यवस्था उभर रही थी उसे पूंजीवाद कहा जाता है अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के लक्षण सबसे पहले उन देशों में दिखाई दिए जो शासन की दृष्टि से अपेक्षाकृत उधर थे सर्वप्रथम **16**वीं साड़ी में इंग्लैंड में कृषि के क्षेत्र में यह परिवर्तन दिखाई दिए पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार आंदोलन के दौरान होने वाली भौगोलिक खोजो व्यापार एवं वाणिज्य के विकास एवं अन्य सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तनों के कारण पूंजीवाद का विकास हुआ पूंजीवाद का विकास विभिन्न चरणों में हुआ था तथा इन चरणों के दौरान इसके स्वरूप में भी परिवर्तन आता रहा इस व्यवस्था का महत्वपूर्ण विश्लेषण जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान कल मार्च ने अपनी पुस्तक दास कैपिटल में किया है

1.**अर्थ एवं परिभाषा.** साधारण रूप में पूंजीवाद वह अर्थव्यवस्था है जिसमें पूंजी का उपयोग होता है इस व्यवस्था का संचालन एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह के द्वारा किया जाता है इसमें व्यक्ति तथा व्यक्तियों का समूह इनके पास पर्याप्त धन होता है बड़े पैमाने पर व्यवसाय का गठन करता है इस धन से वह उत्पादन के लिए कच्चा माल तथा औजार खरीदना है तथा बड़ी संख्या में कारीगरों के वह काम पर लगता है व्यक्ति अथवा समूह द्वारा किए गए ऐसे व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है लेकिन समाज अथवा देश की भलाई करना

इस व्यवस्था में मजदूरों के पास कुछ नहीं होता वे केवल मजदूरी के लिए काम करते हैं व्यवसाय में होने वाले लाभ को समूह या व्यक्ति उन्हें निवेश करते हैं और लाभ कमाते हैं इस व्यवस्था में पूंजीपति करने वाली वेबसाइट मजदूर तथा कार्यक्रमों को उनके द्वारा लगाए गए श्रम के कुछ भाग के लिए मजदूरी देता है तथा शेष भाग को अपने पास रख लेता है इस प्रकार व्यावसायिक मजदूर के जी श्रम को चुरा लेता है उसे अतिरिक्त श्रम कहा जाता है इस अतिरिक्त श्रम द्वारा उत्पादित तथा बाद में बेचा गया तैयार माल व्यवसाय का लाभ या मुनाफा होता है इसी मुनाफे से व्यावसायिक मजदूरों पर अपनी सट्टा की स्थापना करता है व्यावसायिक मजदूरों को काम में लगाने के लिए जो धन खर्च करता हैवह पूंजी लाने वाला धन कहलाता है तथा व्यवसाय से पूज्य पति कहलाता है

2. पूंजीवाद के लक्षण तथा विशेषताएं.

1. निजी संपत्ति.

2. उत्तराधिकार अथवा विरासत.

3. व्यवसाय चुन्नी की स्वतंत्रता.

4. उत्पादन का उद्देश्य निजी लाभ.

5. बड़े स्तर पर उत्पादन.

6. वास्तु उत्पादन.

7. प्रतिस्पर्धा.

8. उपभोक्ता की पसंद

9. बाजार की भूमिका

10.आय धन का असमान वितरण। **पूंजीवाद के उदय एवं विकास के कारण**. विश्व आधुनिक पूंजीवाद का उदय सबसे पहले यूरोपीय हुआ आधुनिक पूंजीवाद का उदय किसी एक घटना या किसी एक कारण के परिणाम स्वरुप अचानक नहीं हुआ बल्कि धीरे-धीरे अनेक तत्वों के सामूहिक परिणाम स्वरुप पूंजीवाद का उदय हुआ पूंजीवाद के उदय के लिए उत्तरदाई कर्म का विवरण किस प्रकार है

1 राजनीतिक अर्थशास्त्रियों की भूमिका

पूंजीवाद का विकास.

पूंजीवाद के प्रभाव.

1. कृषि का प्रभाव.

2. श्रेणी व्यवस्था का अंत.

3 उपभोक्तावादी संस्कृति का उदय..

4 समाज में अनेक प्रमुख वर्गों का उदय..

5 नए उद्योग धंधों का उदय..

6. बाजार तंत्र का विकास.

7. वित्तीय संस्थाओं का विकास.

8. उपनिवेशवाद को प्रोत्साहन.

9. उपनिवेशों की दुर्दशा

10. संसदीय लोकतांत्रिक राज्यों की स्थापना.

11. श्रमिकों का शोषण.

12. समाजवाद एवं साम्यवाद का उदय.

13. विश्व में इंग्लैंड की आर्थिक सर्वोच्चता.

प्रश्न 11. भारत में राष्ट्रीय जागरण के उदय के कारण पर प्रकाश डालिए।

Ans.19वी सदी भारतीय इतिहास का पुनर्जागरण काल कहलाती है इस पुनर्जागरण के परिणाम स्वरुप अनेक धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन का आरंभ हुआ इन आंदोलनों ने एक और धर्म का समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया तथा दूसरी तरफ भारत में राष्ट्रीयता की आधारशिला तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई राष्ट्रीयता जागृत मानव का एक आवश्यक गुण माना जाता है समान अर्थ में यह है एक मानसिक मनोवृति है जो मानव में प्रदेश के प्रति मर मिटने की भावना जाग्रत करती है इस चेतना के परिणाम स्वरुप देश के विभिन्न भागों में ऐसे राजनीतिक विचारों तथा संगठनों का जन्म होने लगा जिनके बारे में अब तक भारतीय अनभिज्ञ थे इसी चेतना का परिणाम था कि देश के विभिन्न भागों में बंगाल ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन पुणे सार्वजनिक सभा मुंबई प्रेसिडेंसी असोसिएशन मद्रास महाजन सभा जैसी संस्थाओं का उदय हुआ इन संगठनों ने सोए हुए भारतीयों को जगाया तथा धीरे-धीरे उन्हें राष्ट्रीयता की भावना विकसित की निरंतर विकसित होती राष्ट्रीय ताकि भावना के परिणाम स्वरुप **1885** ईस्वी में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई कांग्रेस की स्थापना के पश्चात भारतीय मन में राजनीतिक जागरण अधिक से अधिक उभरता चला गया कांग्रेस ने भारतीय लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया तथा अंत में उन्हें राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कराई से भारत एक राष्ट्र बन सका

राष्ट्रीय चेतना के उदय एवं विकास के कारण.

1. विदेशी शासन के प्रभाव.

2. राजनीतिक एवं आर्थिक एकता की स्थापना.

3. 1857 ई का स्वतंत्रता संग्राम.

4. धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन

5. पश्चिमी विचारों एवं शिक्षा का प्रभाव.

6. भारतीय समाचार पत्र एवं साहित्य.

7. जातीय विभेद की नीति.

8. यातायात एवं संचार के साधनों का विकास.

9. ऐतिहासिक खोजें.

10. सरकारी नौकरियों में भारतीयों के साथ पक्षपात.

11. विदेशी घटनाओं का प्रभाव.

12. लॉर्ड लिटन की प्रतिक्रियाबादी नीति.

13. इल्बर्ट बिल विवाद.

14. प्रांतीय तथा राष्ट्रीय राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना

15. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना.

प्रश्न 12. इतिहास के स्रोतों का आप कैसे मूल्यांकन करते हैं

Ans इतिहास आई वर्तमान से जुड़े हुए अतीत का हो या भूतकाल से जुड़े हुए अतीत का उसका यथा तथ्य ज्ञान उन स्रोतों के माध्यम से ही हो सकता है जो संदर्भित कल से संबंधित हूं अतीत का समग्र इतिहास लगभग ऐसे स्रोतों पर आधारित है जिनके विषय में प्राप्त सामग्री स्वयं बोलती तो है लेकिन अध्यक्षता के लिए उसकी भाषा को इस रूप में समझाना बहुत दूर होता है जिस रूप में वह बोलती है इस कठिनाई को प्राय अध्यता उपलब्ध सामग्री को स्वयं अपने अनुमान और कल्पनाओं के आधार पर बुलवाते हैं इस संबंध में कुछ इतिहासकारों का कहना है कि ऐसी सामग्री खुद नहीं बोलते अपितु उसे इतिहासकार बुलवाता है जबकि दूसरों का मत है कि यह सामग्री स्वयं बोलती है दोनों ही बातें सत्य है इतिहास लेखन में स्रोत इतिहासकार के लिए कच्चे माल की तरह होते हैं क्योंकि उन्हें से इतिहास को रूपरेखा का निर्माण होता है इतिहास के स्त्रोत केवल ग्रंथ ही नहीं होते बल्कि पुरातत्व एवं मुद्रा शास्त्र पुरालेख भी ऐतिहासिक तथ्यों की विशेष जानकारी देने वाले विश्वसनीय स्रोत हैं उपलब्ध प्राचीन साहित्य तथा विदेशी यात्रियों की विवरण भी विचारणीय स्रोत होते हैं

ऐतिहासिक स्रोतों को दो भागों में बांटा जा सकता है। **a प्रधान स्रोत**

B गोंड स्त्रोत

1 प्रधान स्रोत. प्रधान स्रोतों में वह स्रोत अभाव सम्मिलित है जिसे तथ्यों की सीधी जानकारी प्राप्त होती है जैसे ऐसे ग्रंथ जिनका लेखक घटनाओं से सीधे रूप से संबंधित रहा हो या घटना कल का पर्यवेक्षक रहा हो यह उसे

समय के ऐतिहासिक पात्रों के बीच इसका व्यावहारिक क्षेत्र रहा हो घटना कल के अभिलेख भी इतिहास के प्रधान स्रोतों की गिनती में आते हैं

प्रधान स्रोतों के भेद

1. **समकालीन अभिलेख.** प्रोफेसर गोल चक्र ने कहा है कि समकालीन अभिलेख एक दस्तावेज है जिसमें संबंधित व्यक्ति को अपने कार्य संपादन के लिए कुछ अनुदेश दिए जाते हैं इसमें अनुदेश दस्तावेज नियुक्ति सूचनाओं आदेश आदि आते हैं ऐसे अभिलेखों में छल प्रपंच होने की संभावना कम की जाती है इसलिए ऐसे अभिलेखों को भी इतिहासकार को अन्य साक्ष द्वारा प्रमाणित कर लेने की सलाह दी जाती है आंसू लेख तथा ध्वनि लेख रिकॉर्ड भी महत्वपूर्ण होते हैं

2. **गोपनीय प्रतिवेदन.** हालांकि यह प्रतिवेदन प्रधान साक्षी ही होते हैं लेकिन यह समकालीन दस्तावेजों से कम विश्वसनीय माने जाते हैं प्राय घटना के बाद लिखे जाते हैं सैनिक और राजनीतिक संवाद इसी प्रकार के होते हैं

3. **सार्वजनिक प्रतिवेदन.** सार्वजनिक प्रतिवेदन आप जनता के लिए उपलब्ध होते हैं नीतिगत कर्म से उनका प्रयोग किसी विशेष प्रभाव या उद्देश्य प्राप्ति के लिए हो सकता है इसलिए इनकी तथ्य अनुकूल विश्वसनीयता परीक्षणों मुखी होती है सार्वजनिक प्रतिवेदन प्रदा प्रकार के होते हैं

1. **समाचार पत्र तथा विज्ञप्ति.** महत्वपूर्ण विश्वसनीय स्रोत है

2**. संस्मरण तथा आत्मकथाएं.**

3. सरकार या किसी भी ऐसे घर आने का सरकारी अधिकृत इतिहास . यह भी एक सार्वजनिक प्रतिवेदन की तरह होता है उनका ध्यान इस आधार पर करना चाहिए कि यह किसी-किसी गत उद्देश्य दिखा गया होगा

4. **प्रश्नावली.** यह एक नूतन प्रणाली है जिसमें सार्वजनिक रूप से लोगों से किसी विशेष घटना या परिस्थिति के बारे में उनकी राय जानने के लिए प्रश्न किए जाते हैं प्रश्न करता प्रश्नावली का प्रयोग कर विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने के लिए किसी विशेष व्यक्ति से भी संबंध स्थापित करता है और उस से गोपनीय रूप से पूछताछ भी करता है प्राय यह कार्य गुप्त के रूप में प्रसन्न करता तथा उत्तरदाता के बीच व्यक्तिगत संबंधों पर आधारित होता है

5. **सरकारी दस्तावेज.** अनेक सरकारी दस्तावेज इतिहासकार के लिए महत्वपूर्ण होते हैं

6. जनमत. जनमत की अभिव्यक्ति संपादकीय लिखे विशिष्ट लिखो पुस्तिकाओं संपादक के नाम पत्रों आदि के माध्यम से होती है इतिहासकार को यह भी काफी उपयोगी जानकारी प्राप्त करते हैं

7. **साहित्य.** एक प्रकार से देखा जाए तो तत्कालीन साहित्य इतिहासकार के लिए बड़े काम की चीज होती है साहित्य एक प्रकार से समाज और संस्कृति का दर्पण होता है साहित्य भले ही काल्पनिक रूप में होता है लेकिन उसकी कल्पनाएं समकालीन संस्कृति और घटनाओं में निहित होती है

8. **लोक साहित्य लोकगीत** आदि. प्रयोग साहित्य का आधार लोक जीवन को प्रारंभिक करने वाले वीरों की गाथाएं होती है जैसे भारत में आल्हा ऊदलऔर शिष्य युद्ध के नायक विलियम टेल के लोकगीत प्रसिद्ध है लोक साहित्य का आंचलिक महत्व होता है और व्यापक महत्व भी यूनान में हमर और ओडिसी जैसे महाकाव्य की गणना लोक साहित्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें यूनान का प्राचीन इतिहास छुपा हुआ है भारत में भी रामायण और महाभारत यहां की अमर लोक साहित्य हैं

B**.गोण स्तोत्र**. गुणसूत्र हुए हैं जो प्रधान स्रोतों पर आधारित होते हैं उदाहरण स्वरूप किसी अधिकारी द्वारा लिखी गई विज्ञप्ति प्रधान स्रोत हो सकती है लेकिन उसमें दिए गए ब्यावरे गुण स्तोत्र कहे जाएंगे क्योंकि वह उसे अधिकारी ने स्वयं तैयार नहीं किए होंगे बल्कि वह अपने उसने अपने अधीनस्थ कर्मचारी द्वारा एकत्र तथा तैयार कर आए होंगे इसी प्रकार किसी तथ्य का प्रधान स्रोत कोई समाचार पत्र हो सकता है क्योंकि जिन घटनाओं का उल्लेख समाचार पत्र में होता है उन्हें सत्य माना जाता है लेकिन उनका साक्षी स्वयं उनका विवरण प्रस्तुत करने वाला नहीं होता वह उनका विवरण प्रत्यक्ष दर्शन से प्राप्त करता है अतः उनमें दूसरों का सहारा ले0ना होता है अतः ऐसे विवरण को प्रधान स्रोतों से अद्भुत गुण स्तोत्र कहा जाता है

गोण स्तोत्र. इतिहासकार को निम्न रूप में सहायक होते हैं

1.गोण वृतांतों के सुधार में.

2. ग्रंथ संदर्भों के संकेत प्राप्त करने में.

3. उद्रणों को ग्रहण करने में.

4. व्याख्या करने में.

स्रोतों की प्रमाणिकता व विश्वसनीयता.

आलोचना के प्रकार. इतिहासकार द्वारा ऐसे स्रोतों या स्रोत सामग्री की सत्यता की जांच क्रिया का आलोचनात्मक संपूर्ट बाह्य या आंतरिक हो सकता है

बाह्य आलोचना.

दस्तावेजों की जालसाजी.

सत्यता की संपुष्टि.

1.लेखकत्व.

2. दस्तावेज की तिथि.

3. मूल पाठ का सत्यापन.

4. उचित अर्थ का प्रयोग.